SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-02| December- 2025
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i2.35

श्री रामचरितमानस : एक समीक्षात्मक मूल्यांकन

डॉ. आभा गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर–हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय जक्खिनी–वाराणसी

शोध सारांश

महाकवि तुलसीदास भक्ति काल के विशिष्ट रत्नों में से एक है। इनकी प्रसिद्धि का श्रेय उनकी रसज्ञता को जाता है। तुलसी का काव्य क्षेत्र इतना व्यापक है कि उसे देखकर उनकी अद्भुत प्रतिभा पर सहज ही विश्वास हो जाता है। उन्होंने अपने काव्य में जीवन की प्रत्येक स्थिति का चित्रण किया है। तुलसी को मानव हृदय की जैसी पहचान है वैसी कम कवियों को होती है। यही कारण है कि श्री रामचरितमानस जैसे प्रबंध काव्य में सर्वत्र सरसता और विश्वसनीयता बनी रही है।

बीज शब्द–तुलसीदास, रामचरितमानस, मानवीय मूल्य, समरसता, समन्वय, वन, चित्रकूट, कैकेयी, राम आदि।

प्रस्तावना– तुलसी के काव्य का प्रमुख प्रतिपाद्य राम भक्ति है। उन्होंने राम की कथा और लीलाओं को आधार बनाकर श्री रामचरितमानस का सृजन किया। तुलसीदास ने अनेक उत्कृष्ट काव्य ग्रन्थों की रचना की है। इनमें से सभी भक्ति भाव, अनुभूति प्रवण एवं कलात्मक विशेषताओं में अद्वितीय हैं किंतु इन्हें सर्वाधिक प्रसिद्ध उनकी रचना श्रीरामचरितमानस के कारण प्राप्त हुई। यह देश में ही नहीं विश्व के श्रेष्ठ महाकाव्यों में से एक है। तुलसीदास ने रामचरितमानस में समाज के सभी अंगों, पक्षों, व्यक्ति के व्यवहारों, परिवार एवं समाज के सभी संबंधों का आदर्श अत्यंत उत्कृष्टता के साथ चित्रि किया है।

भारत अध्यात्मवादी देश है। यहां के मनुष्य अपने व्यस्त जीवन से कुछ क्षण निकाल कर ईश्वर की आराधना में लगाते हैं। ईश्वर में आस्था एवं विश्वास रखते हैं। परंतु वर्तमान युग में बौद्धिकता और यांत्रिकता ने उसे व्यक्तिवादी बना दिया और व्यक्तिवादी स्वार्थ परता उसे दिशाहीन बना भटका रही है। मनुष्य इतना स्वार्थी हो गया है कि वह अपने सिवाय किसी अन्य के बारे में सोच ही नहीं पाता है फलस्वरुप आपसी रिश्ते तार तार होते जा रहे हैं। वह अपनी आने वाली पीढ़ी से भी बेखबर है कि उनके भविष्य का क्या होगा? समाज से नैतिकता व संस्कार विलुप्त होते जा रहे हैं जिससे एक संस्कृति विहीन समाज का निर्माण हो रहा है । इस संस्कृति विहीन समाज को आवश्यकता है– दया की, विनम्रता की, सुंदर भाषा की, भाव की, की, आस्था की, आदरता की, संस्कृति की। तभी तो आज से 600 साल पहले संत कवि तुलसीदास मानस में कहते हैं–

"समर विजय रघुवीर के चरित जे सुनहिं सुजान।
विजय विवेक विभूति नित तिन्हहिं देही भगवान।।"[१]

व्यक्ति विजय को प्राप्त कर ले, साधन संपन्न हो जाए, भले ही सब कुछ प्राप्त कर ले पर वह विवेकी भी हो, ईश्वर से जुड़ा हो, आस्था से परिपूर्ण ऐसी परिकल्पना श्री रामचरितमानस में है।

व्यक्ति की सफल जीवन का आधार है– मानवीय मूल्य । यदि इसका पतन हो गया तो वह व्यक्ति समाज के लिए मूल्यहीन है। मानवीय मूल्य ही व्यक्ति को उदात्त बनाता है। मानवीय मूल्यों के बारे में तुलसीदास जी कहते हैं कि जब मनुष्य मानवीय मूल्यों से युक्त होता है तब उसमें दया, करुणा, अहिंसा, प्रेम,सत्य, सदा सशयता सहिष्णुता, धैर्य, परोपकार, संयम, अपरिग्रह, शुचिता, शांति, संतोष आदि का उदय होता है। परंतु इसके विपरीत जब उसमें मानवीय मूल्य का अभाव होता है तो विभिन्न विकारों एवं दोषों से भर जाता है। जो स्वयं को एवं समाज को कष्ट पहुंचाता है। गोस्वामी जी कहते हैं–

"जप तप मख सग दम व्रत दान, बिरती बीवेक जोग बिग्याना ।

सब कर फल रघुपति पद प्रेमा, तहिं बिनु कोऊ नहिं पावई छेगा।"[२]

मानवीय मूल्यों के कारण ही राम को मानव से भगवान की पदवी प्राप्त हुई। श्रीरामचरितमानस मानवीय मूल्यों का सार है। मानस के प्रत्येक व्यक्ति में मूल्य का समावेश दिखाई देता है। रामचरितमानस मानव कल्याण की भावना से उत्प्रोत महाकाव्य है। यह व्यक्तियों को समाज में सद्प्रवृत्तियों को आत्मसात करने का संदेश देता है। तुलसीदास श्री राम के चरित्र से सद्गुणों को ग्रहण करने की तरफ इशारा करते हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं कि– "आज राजा से रंक तक के घर में गोस्वामी जी का रामचरितमानस विराज रहा है और प्रत्येक प्रसंग पर उनकी चौपाइयां कही जाती हैं।"[३]

सामाजिक समरसता का तात्पर्य है विभिन्न धर्मो, विभिन्न जातियों, विभिन्न विचारों आदि का समुचित संयोजन। समाज में रहने वाले व्यक्तियों के बीच किसी प्रकार का भेदभाव, ऊंच–नीच आदि के भाव का अभाव ही समरसता है। किसी दूसरे के दुख में दुखी होना, सुख में सुखी होना, दूसरे के धर्म को सम्मान देना, दूसरे के विचारों को समझना आदि सामाजिक समरसता को स्थापित करता है। महाकवि तुलसीदास ने अपने महाकाव्य श्रीरामचरितमानस में समरसता के उच्चतम स्तर को स्थान दिया है। तुलसीदास ने धार्मिक सामाजिक, राजनीतिक, प्राकृतिक तथा मानवीय सभी संबंधों के बीच सामंजस्य बिठाने का पूरा प्रयास किया है। तुलसी के राम, निषाद राज केवट से मित्रता करते हैं, शबरी के जूठे बेर खाते हैं, गिद्धराज की घायल होने पर दुखी होते हैं, जंगल में वनवासियों के साथ रहते हैं, वानर राज सुग्रीव व हनुमान को भाई के समान मानते हैं। यह सभी प्रसंग समरसता की पुष्टि रहते हैं. करती है। वे संसार की जड़ चेतन सभी जीवों की वंदना करते हैं। देवता, दैत्य, मनुष्य, नाग, पक्षी, प्रेत, पिता, गंधर्व, किन्नर, निशाचर आदि सभी को प्रणाम करते हैं–

"जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि

बंदऊं सबके पद कमल सदा जोरि जुग पानि

देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गंध

बंदऊं किन्नर रजनिचर कृपा करो अब सर्ब ।[१४]

रामचरितमानस में कहीं भी भेदभाव दृष्टिगोचर नहीं होता है। भगवान श्री राम कौशल्या के पुत्र थे मगर उन्होंने कभी भी कैकेयी के पुत्रों व सुमित्रा के पुत्रों में भेदभाव नहीं किया। अपनी मां से बढ़कर उन्होंने कैसकेयी को सम्मान दिया। उनके अत्यंत कठोर आदेश का पालन करने में भी जरा भी नहीं हिचकते बल्कि वह कहते हैं–वह पुत्र बड़ा भाग्यवान होता है जो अपने माता–पिता के वचनों का अनुरागी होता है। उनकी आज्ञा का पालन करके अपने माता–पिता को संतोष प्रदान करने वाला पुत्र सारे संसार में दुर्लभ है।

'सुनू जननी सोइ सुत बड़भागी। जो पितु मात वचन अनुरागी।

तनय मातु पितु तोष निहारा। दुर्लभ जननी सकल संसारा।"[५]

वर्तमान काल में समाज का प्रत्येक व्यक्ति जीवन में आधुनिकता एवं बौद्धिकता के पीछे भाग रहा है। उससे उसका जीवन एकाकी होता चला जा रहा है। जीवन के आदर्श, मानवीय मूल्य सब पीछे छूटते जा रहे हैं। न समाज में न परिवार में कहीं भी समन्वय नहीं दिखाई पड़ता है। परंतु तुलसीदास ने मानस में समन्वय का ऐसा चित्रण किया है जो किसी अन्य काव्य में

© Shiksha Samvad| Received: 03 December 2025 | Accepted: 10 December 2025 | Published: 15 December 2025

परिलक्षित नहीं होता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं कि– "लोक और शास्त्र का समन्वय, गार्हस्थ और वैराग्य का समन्वय, भक्ति और ज्ञान का समन्वय, भाषा और संस्कृत का समन्वय, निर्गुण और सगुण का समन्वय, कथा और तत्व ज्ञान का समन्वय, ब्राह्मण और चांडाल का समन्वय, पांडित्य और अपांडित्य का समन्वय, रामचरितमानस शुरू से आखिर तक समन्वय का काव्य है।[६]

तुलसीदास ने भक्ति और ज्ञान के बीच समन्वय स्थापित करते हुए कहा है कि दोनों में कोई भेद नहीं है क्योंकि दोनों ही सांसारिक क्लेश का नाश करते हैं–

"भगतिहि ग्यानहि नहीं कछु भेदा,

उभय हरहिं भव संभव खेदा।"[७]

भारतीय समाज के संस्कारों में एक संस्कार मर्यादा भी है। मर्यादा जो हर रिश्ते को सम्मान के साथ निभाया जाता है। वर्तमान में मर्यादा रूपी मानवीय मूल्य में अत्यंत ही गिरावट आई है। व्यक्तियों के अंदर मर्यादा नाम की कोई चीज नहीं है। वह अपने अहंकार और बुद्धिहीनता के कारण किसी से भी मर्यादित व्यवहार नहीं करता है । पुत्र– पिता की मर्यादा, पुत्री – माता की मर्यादा, भाई–बहन की मर्यादा आदि तमाम रिश्ते मर्यादा की नींव पर युगों युगों तक जीवित रह सकते हैं। परंतु जहां पर इसका ख्याल नहीं रखा गया वहां रिश्ते पल भर में टूट कर बिखर जाते हैं। तुलसीदास जी की रामचरितमानस में मर्यादा की पराकाष्ठा दिखाई पड़ती है। राम ने माता–पिता के लिए 14 वर्ष का वनवास स्वीकार किया, लक्ष्मण ने भाई के लिए अपनी पत्नी को छोड़कर सेवा भाव को स्वीकार किया, सीता ने अपनी मर्यादा की रक्षा करते हुए पति के साथ वन जाने का निर्णय लिया, भरत ने राजगद्दी को त्याग दिया और 14 वर्ष तक भाई के चरण पादुका को गद्दी पर रखकर पूजन अर्चन किया। मानस में राम मर्यादा के परम आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित है वह अपनी माता से कहते हैं–

"आयसु जेहि मुदित मन माता। जेहिं मुद मंगल कानन जाता।

जनि स्नेह बस डरपति बोलें। आनंदु अंब अनुग्रह तोरें।"[८]

महाराजा दशरथ को अपनी कुल मर्यादा का प्रतिक्षण ध्यान बना रहता है। तभी तो वो कैकेयी के वरदान के प्रति दृढ़ता देखकर बार–बार यह कहते हैं– ष्रघुकुल रीति सदा चली आई। प्राण जहु बरु वचन न जाए।"[९]

तुलसीदास ने नारी के विविध रूपों का रामचरितमानस में वर्णन किया है। वह नारी के सत् असत्, पारिवारिक धार्मिक, राजनीतिक एवं सामाजिक विभिन्न रूपों को चित्रित करने का प्रयास करते हैं। कहीं नारी के पत्नी रूप का, कहीं पुत्री रूप का, कहीं कुलवधू रूप का, कहीं माता रूप का, कहीं रानी रूप का तो, कहीं दासी रूप का बड़ा ही मनोहारी चित्रण मिलता है। तुलसीदास ने कैकेयी के मातृ हृदय का एक स्थल पर वर्णन करते हुए कहा है कि– कैकयी के समुचित मातृत्व का मिथ्या आवरण तब छिन्न–भिन्न हो जाता है जब वह सीता सहित सरल भाइयों राम और लक्ष्मण को वन में देखकर धरती से छाती फटने और विधाता से मृत्यु की याचना करती है–

"लखि सिय सहित सरल दोउ भाई। कुटिल रानी पछितानि अघाई

अवनि जमहि जाचति कैकेई । महि न बीच विधि मीचु न देखी।"[१०]

जनक नंदिनी सीता अयोध्या नरेश की कुलवधू सीता को मानस में एक साधारण नारी की तरह चित्रित किया गया है। वह अपने पति के प्रति तो सदैव नतमस्तक रहती है।परंतु सास के प्रति भी कर्तव्यनिष्ठ दिखाई पड़ती हैं। चित्रकूट में वह अपनी सेवा से सभी सासो को प्रसन्न कर लेती हैं। राजाराम की पत्नी सीता का गृह लक्ष्मी रूप इतने से ही प्रत्यक्ष हो जाता है–

"यद्यपि गृह सेवक सेवकिनी । विपुल सकल सेवा विधि गुनी।

निजकर गृह परिचरजा करई। रामचंद्र आयसु अनुसरई।

© Shiksha Samvad| Received: 03 December 2025 | Accepted: 10 December 2025 | Published: 15 December 2025

विधि कृपासिंधु सुख मानई । सोई कर श्री सेवा विधि जानई ।

कौशल्या सासु गृह माहीं। सेवई सवहिं मान मद नाहीं।"[११]

निष्कर्ष

तुलसीदास कृत श्री रामचरितमानस विश्व की अमूल्य धरोहर एवं अप्रतिम रचना है । जिस प्रकार से रामचरितमानस में जीवन, समाज, प्रकृति, मनुष्य, पशु पक्षी, रिश्ते, परिवार आदि का आदर्श पूर्ण चित्रण मिलता है, अन्यत्र कहीं नहीं है। तुलसीदास ने ईश्वर का मनुष्य रूप में एवं उनकी लीलाओं के माध्यम से विकृत समाज को जो संदेश दिया है वह अविस्मरणीय है। मानवीय मूल्य, आदर्श, लोक मंगल की भावना, समन्वय की भावना, समरसता की भावना सभी का जो संगम मानस में परिलक्षित होता है वह अद्वितीय है।

संदर्भ सूची

1–तुलसीदास– श्रीरामचरितमानस–६/१२६/६

२– वही– ६४ख/ ५–६

३–आचार्य रामचंद्र शुक्ल – हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ–७७

४–रामचरितमानस–७(ग), (घ)

५–वही–अयोध्याकाण्ड,पद–४१

६–आ० हजारी प्रसाद द्विवेदी – हिन्दी साहित्य की भूमिका, पृष्ठ – ६६

७–रामचरितमानस–११७क ८।

८– वही, अयोध्या काण्ड ५२ (४)

६– वही–२/२७/२

१०–डा० शारदा त्यागी–तुलसी साहित्य में नारी, पृष्ठ – १७७

११–डा० ज्ञानवती त्रिवेदी –गोस्वामी तुलसीदास की दृष्टि में नारी और मानव जीवन में उसका महत्व, पृष्ठ –१७१

Cite this Article:

डा. आभा गुप्ता,“ श्री रामचरितमानस: एक समीक्षात्मक मूल्यांकन” *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 02, pp.259-262, December 2025. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ. आभा गुप्ता

For publication of research paper title

श्री रामचरितमानस : एक समीक्षात्मक मूल्यांकन

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-02, Month December 2025, Impact Factor-RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i2.35